शिक्षण-प्रविधि (रीति) की परिभाषा

(Definitions of Teachniques of Teaching)

शिक्षण-रीति क्या है, इसे और अधिक स्पष्ट ढंग से समझने के लिए यह उचित रहेगा कि विभिन्न विद्वानों ने शिक्षण रीति की जो परिभाषा दी है, उसका अध्ययन किया जाये। इसी उद्देश्य से नीचे कतिपय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का वर्णन किया गया है—

(1) स्टोन्स तथा मोरिस (Stones and Morris)—"शिक्षण-रीति पाठ की सामान्यीकृत योजना है, जिसमें पूर्व निश्चित अधिगम व्यवहारों की संरचना को सम्मिलित किया जाता है तथा इसमें रीतियों की क्रियान्वित हेतु आवश्यक शिक्षण रीतियों का उल्लेख किया जाता है।"

(2) स्ट्रेसर (Strasser)—"शिक्षण-रीति वह योजना है, जो शिक्षण उद्देश्य व्यवहारगत परिवर्तन विषय-वस्तु, कार्य विश्लेषण, अधिगम अनुभव तथा छात्रों के परिपृष्ठ अनुभवों को विशेष महत्व देती है।"

(3) बी० ओ० स्मिथ (B. O. Smith)—"रीतियाँ उन कार्यों के रूपों की द्योतक हैं, जिससे कुछ पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति होती है तथा कुछ कार्यों से परिपृष्ठ हमारी रक्षा की जाती है।"

उपरोक्त परिभाषाओं का यदि हम विश्लेषण करें तो पाते हैं कि शिक्षण-रीति में सामान्यत: निम्न विशेषतायें पाई जाती हैं—

(1) शिक्षण-रति शिक्षण विधि को प्रभावी और सफल बनाती है।

(2) शिक्षण-रीति शिक्षण की एक व्यापक अध्ययन या योजना का पूर्व निश्चित प्रतिमान है।

(3) शिक्षण-रीति शिक्षण उद्देश्यों के आधार पर चुनी जाती है।

(4) शिक्षण-रीति में छात्र व्यवहारों के परिवर्तन पर विशेष बल दिया जाता है।

(5) शिक्षण-रीतियाँ प्रदत्त कार्य का विश्लेषण कर तद्नुसार विविध शिक्षण रीतियाँ प्रयुक्त करने पर बल देती हैं।

(6) शिक्षण रीतियाँ शिक्षण व्यवस्था को उन्नत बनाने में सहायक होती हैं।

शिक्षण-विधि तथा प्रविधि में अन्तर-थट व गेरबेरिच के शब्दों में, "विधि या पद्धति प्रक्रियाओं की वह सुपरिभाषित संरचना है, जिसमें परिस्थितियों की माँगों के अनुसार विभिन्न प्रविधियाँ तथा युक्तियाँ निहित होती हैं।" इस दृष्टि से इन लेखकों ने

Scanned by TapScanner

प्रयोगशाला विधि, योजना विधि आदि को शिक्षण-पद्धतियों के अन्तर्गत रखा है। अत: शिक्षण-विधि कार्य की वह सामान्य योजना है, जिसका निर्धारण किसी विशेष शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है। इस प्रकार शिक्षण-विधि शैक्षिक उद्देश्य से सम्बन्धित है। दूसरे शब्दों में, शिक्षण-विधि वह मार्ग है, जिसके द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये कार्य किया जाता है।

शिक्षा में विधि के साथ कुछ ऐसे पद भी प्रयुक्त किये जाते हैं; जैसे—व्याख्यान विधि, प्रदर्शन विधि, प्रश्न विधि। ये पद (Term) इस बात की ओर संकेत देते हैं कि 'शिक्षक क्या करता है ?' बताना या कहना (Telling), प्रश्न करना (Questioning), दिखाना (Showing), स्पष्ट करना (Explaining) तथा प्रदर्शन करना (Demonstrating) आदि वस्तुत: युक्तियाँ हैं। इनके द्वारा शिक्षक छात्रों को सीखने की प्रक्रिया को अग्रसर करता है। अत: इनको शिक्षण-विधियों के रूप में नहीं माना जाता। ये शिक्षण-विधियाँ न होकर प्रविधियाँ हैं।

शिक्षण विधि तथा प्रविधि में प्रमुख रूप से निम्नलिखित अन्तर है—

विधि

(1) विधि की सामान्य संरचना होती है।

(2) विधि का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व होता है।

(3) विधि शैक्षिक उद्देश्यों से सम्बन्धित है।

प्रविधि

(1) प्रविधि की सामान्य संरचना विधि की संरचना पर निर्भर है।

(2) प्रविधि का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता वरन् वह विधि पर निर्भर है।

(3) प्रविधि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विधि के अन्तर्गत एक साधन के रूप में कार्य करती है।

वाणिज्य शिक्षण की प्रविधियाँ

वाणिज्य-शिक्षण में प्राय: निम्नांकित शिक्षण प्रविधियों (रीतियों) का प्रयोग किया जाता है—

(1) प्रश्न विधि (Questioning Technique)

(2) कार्य निर्धारण प्रविधि (Assignment Technique)

(3) अवलोकन प्रविधि (Observation Technique)

(4) कथन प्रविधि (Narration Technique)

(5) परीक्षा प्रविधि (Examination Technique)

(6) नाटकीय प्रविधि (Dramatisation Technique)

Scanned by TapScanner

(7) उदाहरण प्रविधि (Illustration Technique)

(8) व्याख्या प्रविधि (Explanation Technique)

(9) अभ्यास प्रविधि (Drill Technique)

(10) कहानीकथन प्रविधि (Story telling Technique)

(1) प्रश्न प्रविधि

[QUESTIONING TECHNIQUE]

प्रश्न प्रविधि शिक्षण की एक महत्वपूर्ण युक्ति है। प्राचीनकाल से शिक्षण में इस प्रविधि का प्रयोग होता आया है। शिक्षण में प्रश्नों का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। पाठय-सामग्री को सरल तथा स्पष्ट करने में प्रश्नों का विशेष योगदान रहता है। छात्रों को जो भी ज्ञान प्रदान किया गया है, उसे वो कहाँ तक आत्मसात कर पाये हैं, प्रश्न पूछकर आसानी से ज्ञात किया जा सकता है—प्रश्नों को अच्छे ढंग से पूछना एक कला है। शिक्षक जितना प्रश्नों को पूछने की कलाओं में पारंगत होता जाता है, उसका शिक्षण उतना ही प्रभावी होता जाता है। कुछ विद्वान् इसलिए कहते हैं कि शिक्षण की निपुणता बहुत हद तक प्रश्न पूछने की कला पर निर्भर करती है। मनोविज्ञान की नवीन विचारधाराओं के अनुसार, शिक्षा बालकों की रुचि, योग्यता, क्षमता व आवश्यकतानुसार होनी चाहिए। अध्यापक उसी आधार पर प्रश्नों के माध्यम से बालकों की रुचि, स्तर, योग्यता व आवश्यकता का पता लगा सकता है। प्रश्नों का महत्व छात्रों व अध्यापकों दोनों के लिए समान है। शिक्षक को सफल व प्रभावी बनाने के लिए प्रश्न की कला में निपुण होना आवश्यक है।

कोलविन महोदय के अनुसार, "प्रश्न सबसे बड़ा उत्तेजक है और वह अध्यापक को शीघ्र उपलब्ध हो जाता है।"

टी० रेमेण्ट के अनुसार, "प्रश्न करने की उत्तम शैली का विकास करना प्रत्येक नए अध्यापक की सबसे बड़ी आकांक्षा होती है। चाहे इस कथन में पूर्ण सत्यता हो कि अच्छा प्रश्नकर्त्ता अच्छा शिक्षक होता ही है, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि अच्छे प्रश्न न करने वाला व्यक्ति अच्छा शिक्षक नहीं हो सकता है।"

प्रश्नों का शिक्षण कार्य में प्रयोग न केवल अपरिहार्य एवं अनिवार्य ही है, अपितु अत्यन्त ही उपयोगी तथा प्रेरणादायक भी है। शिक्षण कार्य में प्रश्न एक ऐसी विधि के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जो शिक्षण के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होते हैं। प्रश्नों के द्वारा ही शिक्षक कक्षा में अन्य उद्देश्यों को भी प्राप्त कर सकता है।

कक्षाकक्ष में शिक्षण करते समय शिक्षक सामान्यतया निम्नलिखित कार्यों के लिए प्रश्न पूछ सकता है। दूसरे शब्दों में, कक्षाकक्ष में प्रश्न पूछने के निम्नलिखित कार्य हो सकते हैं—

(1) उस क्षेत्र का पता लगाना जिसका छात्रों को ज्ञान हो अर्थात् छात्रों के पूर्व ज्ञान का पता लगाना।

Scanned by TapScanner

(2) छात्रों को प्रस्तुत पाठ के लिए तत्पर करना।

(3) उन क्षेत्रों का पता लगाना जिसका छात्रों को ज्ञान नहीं है।

(4) छात्रों के पूर्व ज्ञान तथा प्रस्तुत पाठ में सम्बन्ध स्थापित करना।

(5) छात्रों की चिन्तन शक्ति का विकास करना।

(6) छात्रों को प्रेरणा प्रदान करना।

(7) पाठ का विकास करना।

(8) छात्रों की रुचि जाग्रत करना।

(9) छात्रों की कल्पना-शक्ति का विकास करना।

(10) छात्रों की इस प्रकार सहायता करना कि विषय-वस्तु को व्यवस्थित कर सके।

(11) कक्षा में छात्रों को मानसिक रूप से उपस्थित रखना।

(12) अभ्यास तथा पुनरावृत्ति कार्यों के लिए।

(13) विषय-वस्तु के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर बल देना।

(14) छात्रों का मूल्यांकन करना।

(15) छात्रों का रुझान व अभिरुचि का पता लगाना।

(16) शिक्षण कार्य तथा शिक्षण से सम्बन्धित अन्य विधियों व रीतियों आदि की सफलता का मूल्यांकन करना।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कक्षा शिक्षण में प्रश्न पूछने की रीति अत्यन्त उपयोगी तथा महत्वपूर्ण है।

प्रश्नों के प्रकार—कक्षा में छात्रों से प्रश्न अनेक उद्देश्यों से पूछे जाते हैं और जिस उद्देश्य से प्रश्न पूछे जाते हैं, प्रश्न उसी प्रकार का हो जाता है, जैसे यदि प्रश्न पाठ के विकास के लिए हो तो वह प्रश्न विकासात्मक होगा और यदि प्रश्न अभ्यास के लिए हो तो वह अभ्यास प्रश्न होगा। इसी प्रकार यदि अध्यापक अपने विद्यार्थियों से पूर्व ज्ञान का पता लगाने का प्रश्न पूछते हैं तो वह पूर्व ज्ञान प्रश्न होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रश्नों के प्रकार सामान्यत: इस बात पर निर्भर करते हैं कि प्रश्न किस उद्देश्य से पूछे गये हैं। कक्षा में उद्देश्यों के अनुसार निम्न प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं—

(1) प्रस्तावना प्रश्न—प्रस्तावना प्रश्न निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिये पूछे जाते हैं—

(i) छात्रों को प्रस्तुत पाठ के लिए तत्पर तथा प्रेरित करने के लिए।

(ii) छात्रों के पूर्व ज्ञान का पता लगाने के लिए।

(iii) छात्रों के पूर्व ज्ञान एवं नवीन ज्ञान में सम्बन्ध स्थापित करने के लिए।

Scanned by TapScanner

इन प्रश्नों के द्वारा छात्रों में प्रस्तुत पाठ के लिए रुचि भी उत्पन्न की जाती है। प्रस्तावना प्रश्न छात्रों के पूर्व ज्ञान से प्रारम्भ होकर एक शृंखलाबद्ध रूप में सरल से कठिन होकर नवीन पाठ के सम्बन्ध में छात्रों के सम्मुख एक समस्या निर्मित करते हैं। नीचे प्रस्तावना में प्रश्नों का एक उदाहरण दिया गया है—

(1) विक्रय किसे कहा जाता है ?

(2) वस्तुओं के लेन-देन को क्या कहते हैं ?

(3) चिट्ठा और तलचर में क्या अन्तर है ?

(4) क्रय-विक्रय में कितने पक्ष होते हैं ?

उपरोक्त सभी प्रश्नों में शृंखलाबद्धता होती है तथा प्रत्येक प्रश्न पूर्व प्रश्नों की तुलना में क्रमशः कठिन होता जाता है।

(2) विकासात्मक प्रश्न—विकासात्मक प्रश्नों के द्वारा पाठ का विकास किया जाता है। ये प्रश्न पाठ को आगे बढ़ाते हैं तथा पाठ में छात्रों की रुचि को बनाए रखते हैं। ये प्रश्न शिक्षण क्रिया के अनिवार्य अंग हैं। इन्हीं के माध्यम से विषय-वस्तु छात्रों के सम्मुख रखी जाती है शिक्षक का कार्य यह भी देखना है कि छात्र विषय-वस्तु को ग्रहण कर रहे हैं, उसे समझ रहे हैं, अपनी रुचि व ध्यान बनाये हुए हैं तथा इस कार्य में वे कितना सफल हो रहे हैं। अतः विकास प्रश्न उन सभी उद्देश्यों की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

(3) बोध प्रश्न—प्रस्तुत पाठ को समझने में छात्र कहाँ तक सफल हुए हैं, यह जानने के लिए बोध प्रश्न पूछे जाते हैं। इन प्रश्नों के द्वारा यह भी प्रयास किया जाता है कि छात्रों ने जो नवीन ज्ञान ग्रहण किया है, उसे वे एक व्यवस्थित रूप प्रदान कर सकें। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि बोध प्रश्न विषय-वस्तु के उपरान्त ही पूछे जाते हैं—

(1) फाइल करना किसे कहते हैं ?

(2) बैंक समाधान विवरण से क्या आशय है ?

(3) पत्रों को फाइल क्यों करना चाहिए ?

(4) बैंक समाधान विवरण बनाने के कारण बताइये।

(4) तुलनात्मक प्रश्न—शिक्षण के अवबोधात्मक उद्देश्य की परिपूर्ति हेतु सामान्यतः तुलनात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि छात्र दो तथ्यों के मध्य तुलना अथवा अन्तर कर सकते हैं या नहीं। नीचे इस प्रकार के कुछ प्रश्न दिये गये हैं :

(1) खड़ी फाइल और आड़ी फाइल प्रणाली में क्या अन्तर है ?

(2) देशी व्यापार और विदेशी व्यापार में क्या अन्तर है ?

(3) चैक तथा विनिमय पत्र में क्या अन्तर है ?

Scanned by TapScanner

(4) हुण्डी और विनियम पत्र में क्या अन्तर है ?

(5) परिभाषा प्रश्न—जिन प्रश्नों के माध्यम से परिभाषाएँ निकलवाई जायें, वे परिभाषा प्रश्न कहलाते हैं; जैसे—

(1) वाणिज्य की परिभाषा दीजिये।

(2) चैक किसे कहते हैं ?

(3) विक्रय विवरण किसे कहते हैं ?

(6) पुनरावृत्ति प्रश्न—इन प्रश्नों को पाठ के समाप्त होने पर पूछा जाता है। इन प्रश्नों का उद्देश्य पाठ को दोहराना होता है। यदि बालक इन प्रश्नों के ठीक उत्तर देते हैं तो इसका तात्पर्य होता है कि छात्रों ने ढंग से पाठ को आत्मसात किया है।

(1) सूती कपड़ों की मिलों के लिए भारत का मेनचेस्टर किसे कहते हैं ?

(2) सूती कपड़े की मिलें किस राज्य में स्थापित करनी चाहियें ?

(3) सूती कपड़े की मिलें अहमदाबाद में ज्यादा होने के क्या कारण हैं ?

(4) आधुनिक संदेश वाहन के साधनों का वर्णन कीजिये।

अच्छे प्रश्नों की विशेषतायें—प्रश्न रीति शिक्षण कार्य की सफलताओं के लिए एक बहुत ही अच्छी एवं उपयोगी विधा है, किन्तु यह तभी सफलतापूर्वक कार्य कर सकती है, जबकि पूछे गये प्रश्न अच्छे हों। अच्छे प्रश्नों में सामान्यत: निम्न विशेषतायें होनी चाहियें—

(1) स्पष्टता—अच्छे प्रश्नों की भाषा में स्पष्टता होती है। अच्छे प्रश्नों की भाषा से छात्र चाहे उसका उत्तर जानता हो अथवा नहीं, इतना अवश्य जान लेता है कि क्या पूछा गया है। यदि प्रश्न की भाषा ही अस्पष्ट हो तो छात्र जानते हुए भी उसका उत्तर नहीं दे सकता है। "बैंक ऑफ बड़ौदा के डाइरेक्टर का नाम क्या है ?" अस्पष्ट प्रश्न है। ऐसे प्रश्न से उद्देश्य को पूरा नहीं किया जा सकता है।

(2) निश्चितता—अच्छे प्रश्नों का एक सुनिश्चित उत्तर होता है और उस उत्तर के अलावा अन्य सभी उत्तर गलत होते हैं "क्या चैक लिखने वाले का खाता बैंक में होना आवश्यक है।" अनिश्चित प्रश्नों के द्वारा पाठ का विकास सही रूप से नहीं हो सकता है।

(3) उपयुक्तता—अच्छे प्रश्न छात्रों की आयु, योग्यता, स्तर व रुचि के अनुसार होते हैं, इतना ही नहीं, वे विषय-वस्तु तथा किसी पूर्व निर्धारित उद्देश्य के अनुसार भी होते हैं। अध्यापक को प्रश्न पूछते समय इस तथ्य को भी ध्यान में रखना चाहिए कि प्रश्न उपयुक्त हों। छोटी कक्षा के छात्रों से तार्किक प्रश्न पूछना असंगत होता है।

(4) चुनौती—अच्छे प्रश्न छात्रों के सम्मुख ऐसी समस्या प्रस्तुत करते हैं। जिसे छात्र एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं और उसके समाधान हेतु प्रेरित होते हैं। विशिष्ट प्रश्न प्रत्यक्ष तथा सीधे-सादे होते हैं। पेचीदा, समस्या में डालने वाले प्रश्नों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

Scanned by TapScanner

(5) भाषा-शैली—अच्छे प्रश्नों की भाषा-शैली सरल, छात्रों के स्तरानुकूल होती है। प्रश्नों में प्रयुक्त भाषा शैली पेचीदा, क्लिष्ट तथा अलंकारिक न हो। प्रश्नों के वाक्य छात्रों के उपयुक्त होने चाहियें।

(6) संक्षिप्तता—अच्छे प्रश्न संक्षिप्त होते हैं, किन्तु इतने संक्षिप्त भी नहीं होने चाहियें कि छात्र उनका अर्थ ही न समझ सकें। अच्छे प्रश्न बहुत लम्बे नहीं होने चाहियें। लम्बे प्रश्नों को समझने में छात्रों को कठिनाई होती है।

(7) सोद्देश्यता—प्रश्न पूछने का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। इसलिए प्रश्नों का उद्देश्य पहले से निश्चित कर लेना चाहिए। रचनात्मक उद्देश्य के लिए जब प्रश्न पूछे जायें तो प्रश्न पुनर्स्मरण से सम्बन्धित हो, इसी प्रकार अवबोध के लिए पूछे प्रश्न तुलना, अन्तर, वर्गीकरण तथा श्रेणी विभाजन कराने आदि से सम्बन्धित होने चाहियें।

प्रश्न पूछने की कला—वैसे तो हर कोई प्रश्न पूछ सकता है, किन्तु शैक्षणिक दृष्टि से प्रश्न पूछना हर किसी के लिए सम्भव नहीं है। प्रश्न पूछना दिखने में जितना सरल व आसान लगता है, वास्तव में उतना सरल है नहीं। कक्षा में उद्देश्यपूर्णता के साथ प्रश्न करना हर अध्यापक को आता भी नहीं। यह तो एक कला है, जिसमें चिन्तन, अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा ही पारंगत हुआ जा सकता है। इस कला के निखार के लिए आवश्यक है कि अध्यापक जब भी प्रश्न पूछे, उसे निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए—

(1) प्रश्न पूछने से पूर्व अध्यापक प्रश्न पूछने का उद्देश्य निर्धारित करे।

(2) प्रश्न की संरचना प्रश्न पूछने के उद्देश्य के अनुरूप हो।

(3) प्रश्न पूछते समय पूरी कक्षा को सम्बोधित करके उच्चारित किया जाये।

(4) कक्षा में प्रश्न इतनी जोर से उच्चारित किया जाये कि पीछे बैठने वाले छात्र भी आसानी से सुन सकें।

(5) किसी एक छात्र को सम्बोधित करके प्रश्न न पूछा जाये।

(6) प्रश्न का फैलाव अधिक-से-अधिक हो। प्रश्नों का फैलाव पूरी कक्षा पर हो। सभी प्रकार के बच्चों से उनके अनुरूप प्रश्न पूछे जायें।

(7) प्रश्नों की भाषा छात्रों के स्तर के अनुरूप हो।

(8) आवश्यकता पड़ने पर अध्यापक छात्रों को उत्तर देने के लिए प्रेरित करें व सहायता करें।

(9) प्रश्नों की भाषा कटु, कटाक्ष करती हुई नहीं होनी चाहिए। व्यंग्यात्मक तरीका काम में नहीं लिया जाये। प्रश्न सहज स्वरूप में तथा मधुर वाणी में पूछे जायें।

(10) अनावश्यक रूप से कक्षा में प्रश्नों को दोहराना अनुचित है।

Scanned by TapScanner

(11) प्रश्न पूछते समय व्यक्तिगत विभिन्नताओं को भी ध्यान में रखा जाये। कमजोर छात्रों से सरल व बुद्धिमान छात्रों से कठिन प्रश्न पूछे जायें।

(12) प्रश्न इतने कठिन न हों कि छात्र उन्हें सुनते ही हताश हो जायें। समाधान का प्रयास ही न करें।

(13) प्रश्नों के उच्चारण में कृत्रिमता न हो, प्रश्न सहज भाषा व सरल ढंग से पूछे जायें तथा प्रश्न धीमी गति से पूछे जायें।

(14) सामान्यत: ऐसे प्रश्न भी न पूछे जायें, जिनके प्रश्नों का उत्तर हाँ या न में हो। इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने में छात्रों को अधिक चिन्तन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

(15) छात्रों से भ्रम उत्पन्न करने वाले प्रश्न नहीं पूछे जायें।

(16) कक्षा में अलंकारिक प्रश्न भी नहीं पूछे जायें।

(17) सुझावात्मक प्रश्न भी न पूछे जायें।

Scanned by TapScanner